जाति जनगणना: भाजपा का नया गेमप्लान

इंटरव्यू: नील मोहन, यूट्यूब के सीईओ / खुदरा दुकानदार: नहीं कोई खैरख्वाह

21 मई, 2025 60 रुपए

इंडिया टुडे

जंग!

पाकिस्तान का खतरनाक दांव और उससे निबटने के हमारे उपाय

RNI NO. 45823/1986 REGISTRATION NO. DL(DS)-02/MP/2025-26-27, DL(ND)-11/6042/2024-25-26; LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2024-26; FARIDABAD/46/2023-25 www.indiatodayhindi.com

दलित आबादी में उपजातियों का प्रतिनिधत्व

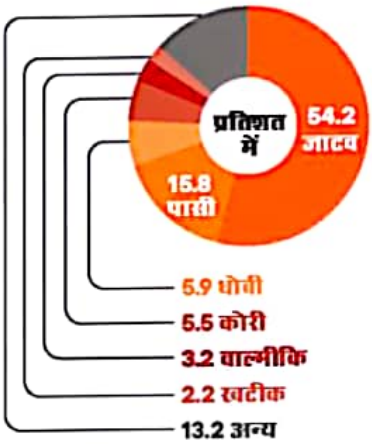

स्रोतः जनगणना-2011. यूपी में अनुसूचित जातियों की कुल 66 उपजातियां हैं. प्रदेश की कुल आबादी में 20.7 प्रतिशत दलित हैं

कम से कम 300 दलित बुद्धिजीवियों को ...क विस्तृत योजना बनाई है. ...सने आंबेडकर जयंती पर ... इस तरह भाजपा का लक्ष्य ...मुदाय के लगभग 22,500 ... प्रभावशाली लोगों तक पहुंचना है. पार्टी रणनीतिकारों ने बूथ, सेक्टर और मंडल स्तर पर ज्यादा दलित नेताओं को जिम्मेदारी देकर अभियान को अंजाम देने के लिए यूपी भाजपा के अनुसूचित जाति मोर्चा को इसमें शामिल किया है.

यूपी भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चे के प्रदेश अध्यक्ष रामचंद्र कनौजिया बताते हैं, ''इस अभियान के लिए विशेष टीमें गठित की गई हैं. प्रत्येक टीम अनुसूचित जाति के बुद्धिजीवियों में से पांच लोगों से संपर्क करेगी और उन्हें पिछले 10 साल में दलितों के कल्याण के लिए पार्टी की ओर से उठाए गए कदमों से अवगत कराएगी.'' कनौजिया के मुताबिक, यह अभियान इस मामले में खास है कि इसमें न केवल पार्टी के दलित नेता बल्कि योगी सरकार के सभी मंत्री, प्रदेश और जिला पदाधिकारी तथा अन्य वरिष्ठ नेता शामिल हो रहे हैं. इन अभियानों से भाजपा विपक्ष के नैरेटिव को कितना निष्प्रभावी कर पाएगी, यह विधानसभा चुनाव नतीजों से जाहिर होगा, लेकिन फिलहाल पार्टी अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रही है.■

दामन पर दाग
अहमदाबाद का वाडीलाल साराभाई अस्पताल

▶ गुजरात

गिनी पिग बनते मरीज

भ्रष्ट डॉक्टरों और दवा कंपनियों की मिलीभगत से मरीजों पर उनकी मर्जी के बगैर अवैध क्लिनिकल परीक्षण करने की वजह से घेरे में आया अहमदाबाद का यह सरकारी अस्पताल

जुमाना शाह

खास बातें

- वीएसएच में 2021-2024 के ... संभावित तौर पर 500 से ... पर अवैध क्लिनिकल ट्रा...
- ट्रायल के बारे में वीएसएच... सदस्यों को पता न होना अस्पताल प्रशासन की दयनीय दशा दर्शाता है.

अहमदाबाद के वाडीलाल साराभाई अस्पताल (वीएसएच) के एक मरीज ने उसे नहीं मिले 3,000 रुपए—क्लिनिकल ट्रायल में भाग लेने के 'भुगतान'—के लिए जब कांग्रेस पार्षद राजश्री केसरी से संपर्क किया तो दोनों को अंदाजा न था कि उसके पीछे क्या चल रहा है. उससे खुलासा हुआ कि 2021 और 2024 के दौरान 500 से ज्यादा मरीजों को उनकी जानकारी के बगैर गिनी पिग में बदल दिया गया. उन्हें ऐसा जताया गया कि उनका बस नियमित इलाज हो रहा है. मगर कथित तौर पर उन पर अस्पताल के कम से कम नौ विभागों में अनधिकृत क्लिनिकल दवा ट्रायल किए गए. इसमें 52 दवा कंपनियों और भ्रष्ट डॉक्टरों की मिलीभगत के आरोप हैं.

मरीजों को मधुमेह, गठिया से लेकर एक दुर्लभ आनुवंशिक बीमारी से संबंधित दवाओं के परीक्षणों में शामिल किया गया और इसमें 17-20 करोड़ रुपयों की घूसखोरी की बात कही जा रही है. किसी पंजीकृत इंस्टीट्यूशनल एथिक्स कमेटी से कोई मंजूरी नहीं ली गई.

फरवरी में वीएसएच को चलाने वाले अहमदाबाद नगर निगम के बजट सत्र के दौरान केसरी के पूछने पर आयुक्त बंछा निधि पाणि ने ऐसे किसी ट्रायल से इनकार किया. बाद में केसरी ने सबूत पेश किए: दो दवा कंपनियों और वीएसएच की अकादमिक शाखा एनएचएल म्युनिसिपल मेडिकल कॉलेज के बीच 2024 में एमओयू पर हस्ताक्षर हुए. एक और दस्तावेज में डीन की ओर से उस काम के लिए एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. देवांग राणा को 'एक्सपर्ट फार्माकोलॉजिस्ट' बनाने का जिक्र है. फिर निगम को जांच समिति गठित करनी पड़ी, जिसने अप्रैल में पुष्टि की कि डॉ. राणा और आठ संविदा डॉक्टरों समेत 17 डॉक्टरों ने अनधिकृत परीक्षण किए, उन सभी को निलंबित कर दिया गया. इसमें शामिल फर्मों की पूरी सूची सामने नहीं आई है.

इंदौर के एक ऐसे ही स्कैंडल पर 2012 की याचिका की सुनवाई करते हुए 30 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को वीएसएच से जुड़े आरोपों पर रिपोर्ट पेश करने को कहा है.■

CamScanner

▶ जम्मू-कश्मीर

कराहती घाटी

पहलगाम हमले की वजह से बेहतरीन पर्यटन सीजन की संभावनाएं तो पहले ही खत्म हो गई थीं. अब जंग की आहट ने आम कश्मीरियों की जिंदगी की मुश्किलें बढ़ाईं

कलीम गीलानी

अभी कुछ दिन पहले ही 'गार्डन ऑफ ईडन' में बहार पूरे शबाब पर थी. वसंत की इसकी खूबसूरती को लाखों आंखें मंत्रमुग्ध होकर निहारना चाहती थीं. मगर दबे पांव आए तूफान की तरह पहलगाम हमले ने सब कुछ तबाह कर दिया. कश्मीर की हरी-भरी वादियों, झिलमिलाती झीलों और चहल-पहल भरी सड़कों की रौनक गुम हो गई. अब ऑपरेशन सिंदूर के बाद जंग की आहट ने इस केंद्रशासित प्रदेश को फिर से अनिश्चितता में झोंक दिया है.

...राहे पर

...क से पहले ही तनावपूर्ण ...ग स्थिति बेहद खराब थी. ...एडवाइजर नाम की ट्रैवल एजेंसी चलाने वाले सुहैल डार बताते हैं, ''करीब 90 फीसद बुकिंग रद्द की जा चुकी थी. 21 लोगों के उच्च स्तरीय समूह ने पहलगाम के ठीक बाद 28 अप्रैल की अपनी बुकिंग रद्द कर दी. हमले के बाद यही ट्रेंड बन गया था. हम एकदम सदमे में हैं.''

अब श्रीनगर एयरपोर्ट भी बंद हो गया है तो पर्यटन के लिहाज से राहत की कोई गुंजाइश नहीं दिखती. अगर भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव और बढ़ा तो इसका असर सिर्फ पर्यटन पर नहीं पड़ेगा, बल्कि और भी दुष्प्रभाव सामने आएंगे. बैसरन घाटी में एम4 कार्बाइन की तड़तड़ाहट से पहले यहां मशहूर हाउसबोट, होटल और कैब-टैक्सियां पर्यटकों से गुलजार थीं. हमले ने सब कुछ तबाह कर दिया.

हाल के वर्षों में थोड़ी-बहुत अनिश्चितता के बीच स्थिति अमूमन स्थिर और शांतिपूर्ण रही जिससे पर्यटकों की संख्या खासी बढ़ी. 2024 में 43,654 विदेशी समेत रिकॉर्ड 35 लाख पर्यटक कश्मीर पहुंचे तथा इस साल यह आंकड़ा और बढ़ने का अनुमान था. रोमांच के शौकीन करीब 75 नए और अनूठे गंतव्यों की ओर आकर्षित हो रहे थे जिससे पर्यटन क्षेत्र एलओसी के और करीब तक विस्तारित हो रहा था, जैसे उत्तर में गुरेज या कुलगाम के अहरबल में पीर पंजाल की चोटियां. 2021 के संघर्ष विराम ने श्रीनगर से करीब 125 किमी उत्तर में किशनगंगा को घेरने वाली करनाह और केरन जैसी खूबसूरत घाटियों को आतंक के दौर से उबरने का मौका दिया. पहले दशकों तक ये जगहें सीमापार से गोलाबारी के कारण इंसानों और आवासों को होने वाली क्षति की वजह से ही सुर्खियों में रहती थीं.

मगर अब घाटी एक बार फिर खौफ के साए में सिमटती जा रही है. पूरी फिजा एक अलग रंगत में दिख रही है, रेड अलर्ट के कारण पसरा सन्नाटा जैतूनी हरे रंग के ट्रकों की आवाजाही से ही टूटता है और लोगों के

खास बातें

- कश्मीर का 12,000 करोड़ रुपए का पर्यटन उद्योग आतंक और जंग के साये से घिरा हुआ है.
- 2024 में 35 लाख पर्यटक यहां आए थे और पहलगाम हमले से पहले तक, इस साल संख्या बढ़ने का अनुमान था.

नाम पर बंकरों में मुस्तैद जवा... गुरेज के घास के मैदानों में वि... टेंट लगाने वाले आमिर अनीस ... ''अब यह सीजन बर्बाद हो चुका है.'' उन्हें 86 किमी दूर बांदीपोरा शहर में लौटने को मजबूर होना पड़ा. वे अपने पीछे घाटी में सेना, गरजती तोपें और वही पुराना दहशतभरा माहौल छोड़ आए हैं जो बढ़ता नजर आ रहा है.

जंग की आहट

ऑपरेशन सिंदूर से पहले ही कश्मीर के आधे से ज्यादा पर्यटन स्थल (87 में 48) बंद हो चुके थे. गुलमर्ग, सोनमर्ग, श्रीनगर की डल झील, मुगल गार्डन और पहलगाम जैसी जगहों पर भी सन्नाटा पसरा है.

जंग की आहट ने आम कश्मीरियों के जीवन में उथल-पुथल मचा दी है. झेलम के उद्गम स्थल वेरीनाग में अप्रैल में रोजाना 10,000 से ज्यादा लोग आते थे. अब यहां 250 फेरीवालों की गाड़ियां काले तिरपाल से ढकी नजर आ रही हैं, जो संकेत है कि यहां सामान्य जीवन खात्मे के कगार पर पहुंच चुका है. चाय और ठंडा पेय बेचने वाले 65 वर्षीय अब्दुल रशीद अपनी और अपने जैसे अन्य आम कश्मीरियों की पीड़ा जाहिर करते हुए कहते हैं, ''हम बहुत बदकिस्मत हैं.''■

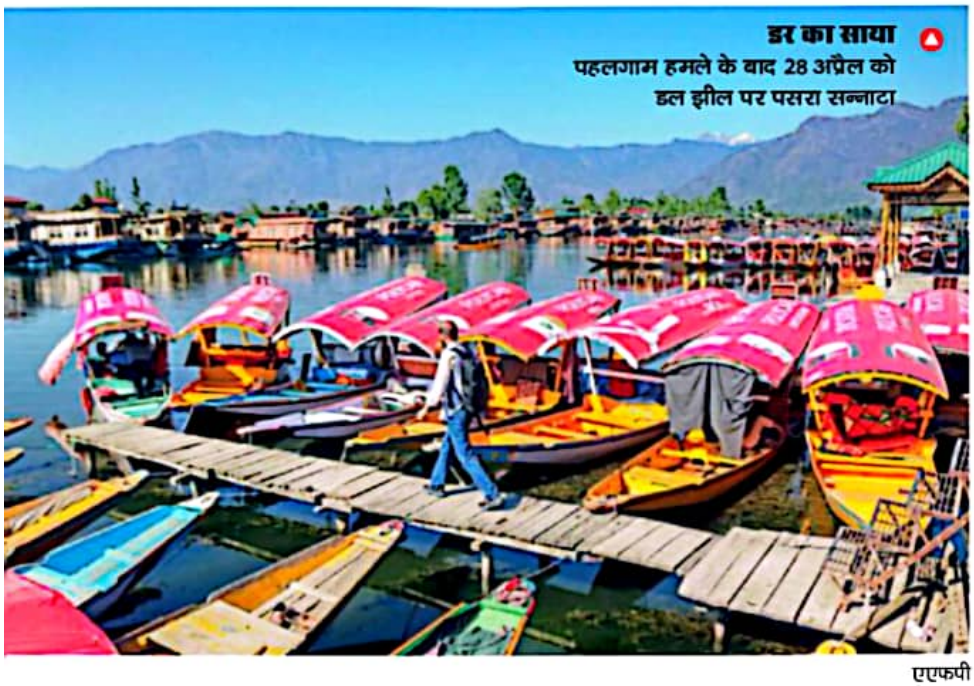

डर का साया
पहलगाम हमले के बाद 28 अप्रैल को डल झील पर पसरा सन्नाटा

एएफपी

CamScanner